प्रकाशकीय

षट्खण्डागम धवल सिध्दान्त का प्रथम बार सम्पादन - प्रकाशन किस प्रकार प्रारम्भ हुआ इसकी पूरी जानकारी ग्रन्थराजके प्रथम संस्करणके प्रथम भागके प्राक् कथनसे प्राप्त हो जाती है और इसी हेतु से उसे इस व्दितीय संस्करणमें भी अविकल रुपसे सम्मिलित किया जा रहा है । इस आगमका प्रथम भाग सन् १९३६ में प्रकाशित हुआ और अन्तिम सोलहवाँ भाग १९५६ में । तत्पश्चात् सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फंड के ट्रस्ट बोर्ड के सम्मुख यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि अब आगे इस योजना की कैसी व्यवस्था की जाय । पूरे प्रकाशनके बीस वर्षमें सम्पादन-प्रकाशनके सूत्रधार एकमात्र स्व. डॉ. हीरालालजी जैन थे । अब उनके सम्मुख ये समस्यायें थी कि एक तो ग्रंथराजके सोलह भागोंमें से आदि के कुछ भाग अलभ्य हो गये थे, किन्तु उनकी मांग बराबर बनी हुई थी । दूसरे इसी बीच मूडबिद्री की ताडपत्रीय प्रतियोंके फोटोग्राफ परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती श्री १०८ आचार्य शांतिसागर दि. जैन जिनवाणी जीर्णोद्धारक संस्था, फलटन, इस संस्थाद्वारा लिये जा चुके थे और वे फलटन (जिला, सोलापूर) के शास्त्र भण्डारमें विराजमान थे । तथा तीसरे डॉ. हीरालालजी चाहते थे कि इन आगम ग्रन्थोंको समुचित रूपसे नयी उपलब्धियोंके अनुसार संशोधित करते रहने और उन्हें जिज्ञासुओंको सदैव उपलभ्य बनाये रखने का स्थायी उत्तरदायित्व की दृष्टिसे किसी एक व्यक्ति पर आधारित न रखकर किसी ऐसी संस्थाको सोपा जाय जो सुदृढ नीव पर निर्मित हो और अपने उद्देश्योमें व्यावसायिक नहीं किन्तु धार्मिक सेवा- भावसे प्रेरित और संचालित हो । अत: उन्होने अपने चिर-सहयोगी डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये के साथ इस समस्या पर सभी दृष्टियोंसे पूर्ण विचार कर यह निश्चय किया गया कि यह भार ब्रह्मचारी जीवराज गौतमचन्द दोशी द्वारा स्थापित जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापूर को सौंपा जाय । तदनुसार उन्होंने दोनों ट्रस्ट बोर्डोके अधिकारीयोंको अवगत कराया और हर्षका विषय है कि दोनोंने ही उनके सत्परामर्शको स्वीकार कर लिया । तथा निम्नलिखित अनुबन्धोंकेसाथ सिद्धान्त ग्रन्थोंकी भावी व्यवस्था जै. सं. सरंक्षक संघको सौंप दी गयी इ

१) सिद्धान्त ग्रन्थोंकी मुद्रित प्रतियोंका समस्त शेष स्टाक जै. सं.सं. संघ सोलापूरको सौंप दिया जाय ।

२) श्रीमन्त लक्ष्मीचन्द्र जी द्वारा दान की गयी रकम के अतिरिक्त ग्रंथमाला पर जो कर्ज हो गया है और जो दि. ४-७-६० के दिन रु. १३९८० (तेरह हजार नौ सौं अस्सी) है वह जै. सं. सं. संघ सोलापूरसे प्राप्त कर चुका दिया जाय ।

३) भविष्यमें प्रकाशित किये जानेवाले सिद्धान्तग्रन्थोंमें 'श्रीमन्त सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक सिद्धान्त ग्रन्थमाला' और मुख्य सम्पादक डॉ. हीरालाल जैन एवं सहसम्पादक डॉ. आ. ने. उपाध्ये के नाम मुखपृष्ठ पर अंकित रहेंगे । तथा प्रकाशक जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापूर रहेगा ।

४) भविष्यमें इन सिध्दान्त ग्रंथोंके सम्पादन - प्रकाशन एवं विक्र्यसे जो आय -व्यय होगा उसका उत्तरदायित्व जै. सं. सं. संघ, सोलापूर पर रहेगा ।

५) इन सिध्दान्त ग्रन्थोंके जो प्रकाशन भविष्यमें होंगे उनकी दस-दस प्रतियां उक्त ट्रस्ट (श्री. राजेन्द्रकुमार जैन, द्वारा-सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन, सा. उ. फंड, विदिशा म. प्र.) को भेट स्वरुप भेजी जाय ।

इन अनुबन्धोंको दोनों पक्षोंके ट्रस्ट बोर्डोंकी शीघ्र ही स्वीकृति प्राप्त हो गयी और तदनुसार ग्रंथों एवं धन-राशि का आदान-प्रदान भी हो गया ।

तभीसे जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापूर, डॉ हीरालाल जैन और डॉ. आ. ने. उपाध्ये के निर्देशनानुसार सिध्दान्त ग्रन्थका फलटनमें विराजमान ताडपत्रीय प्रतियोंके फोटोसे मिलान करा कर उनके प्रकाशनका प्रयत्न करता रहा है । किन्तु हमें खेद है कि इस कार्यके सम्पन्न

करानेमें हमें बारह वर्ष लग गये तब कहीं यह प्रथम भाग तैयार होकर प्रकाशमें लाया जा रहा है । आशा है कार्यकी गुरुताको देखते हुये पाठक हमें क्षमा करेंगे ।

हम स्व. डॉ. हीरालाल जैन और डॉ. आ. ने. उपाध्ये के विशेष अनुगृहीत हैं कि उन्होंने न केवल सम्पूर्ण ग्रन्थराजके प्रथम संस्करणके संपादन का आदि से अन्त तक निःस्वार्थ भावसे अपना सत्कर्तव्य निभाया, किन्तु वे उतनी ही तत्परता से इस व्दितीय संस्करणका भी उत्तरदायित्व
झेलकर अपनी असाधारण दीर्घकालीन साहित्य-सेवा की परम्पराको अक्षुण्ण बनाए हुए हैं ।

निवेदक
श्री वालचन्द देवचन्द शाह
मंत्री,
जैन संस्कृति संरक्षक संघ,
संतोष भुवन, फलटन गल्ली,
सोलापूर (महाराष्ट्र)

दि. ३०-६-७३